Fortnightly per copy Rs. 4/- only

ओ३म्

3rd March 2018

आर्य जीवन
ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హింది-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd & 17th of every month, Date of Posting 3rd & 18th of every month

मगर जिन्दा है तो कीमत नहीं समझते।

चूहा अगर पत्थर का हो तो सब उसे पूजते हैं
मगर जिन्दा हो तो मारे बिना चौन नहीं लेते हैं.

साँप अगर पत्थर का हो तो सब उसे पूजते हैं
मगर जिन्दा हो तो उसी वक्त मार देते हैं..

माँ अगर पत्थर की हो तो सब पूजते हैं,
मगर जिन्दा है तो कीमत नहीं समझते।
बस यही समझ नहीं आता कि

जिन्दगी से इतनी नफरत क्यों और
पत्थरों से इतनी मोहब्बत क्यों..

जिस तरह लोग मुर्दे इंसान को
कंधा देना पुण्य समझते हैं

काश इस तरह जिन्दा इंसान को सहारा देंना
पुण्य समझने लगे तो
जिन्दगी आसान हो जायेगी

కీ॥ శే॥ సంగమేశ్వర్ "సంగమ్" గారికి ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ శ్రద్ధాంజలి.

జోగిపేట ఆర్య సమాజం ద్వారా వైదిక ధర్మ ప్రచారానికి నిర్విరామంగా కృషిచేసిన ఆర్య విద్వాంసులు, కవి-పండితులు సంగమేశ్వర్ "సంగమ్" గారు గత 18 ఫిబ్రవరి నాడు అస్తమించారు. 19వ తేదీన పూర్ణవైదిక పద్ధతిన అంత్యేష్టి సంస్కారం జరిగింది. ఆర్య ప్రతినిధి సభ పక్షాన సభాధ్యక్షులు ఠాకుర్ లక్ష్మణ్ సింగ్, ఉపాధ్యక్షులు పం॥ హరికిషన్ వేదాలంకార్, రామచంద్ర కుమార్ ఉపకార్యదర్శి, ముళీ బ్రహ్మాచారి అంత్యక్రియలలో పాల్గొని శ్రద్ధాంజలి ఘటించారు. వారి కుటుంబానికి సంతాప సానుభూతులు తెలియజేశారు. జోగీపేట ఆర్య సమాజం వారు, గ్రామస్థులు అధిక సంఖ్యలో పాల్గొన్నారు.

సంగమేశ్వర్ "సంగమ్" గారి జీవిత విశేషాలు

అందోలు మండలము జోగిపేట పట్టణములో క్రీ.శ. 1917 నందు శ్రీమతి శ్రీరాజ్యలక్ష్మి సిద్రామప్ప దంపతుల ఏకైక సంతానముగా శ్రీ సంగమేశ్వర 'సంఘం' గారు జన్మించారు. పరిస్థితుల ప్రాబల్యంతో కళాశాల విద్యకు దూరమయ్యాడు. ఉభయ భాషాప్రవీణ శ్రీపగలి లింగయ్య శాస్త్రి వద్ద ఛందోబద్ధ కవితలు వ్రాయుటకు అభ్యసించి పద్యాలు, తేటగీతాలు, ఆట వెలదుల వృత్తాలు, సీసాలు కందాలతో రసవత్తరముగ కవితలు వ్రాసి 80 సం॥లుగా విరాట్, జాగృతి, ఆదిత్య, ఆర్యజీవన్ పత్రికలకు కవితా సుమాలను అందించి పాఠక లోకానికి సుపరిచితులు. వీరి కలం నుండి జాలువారిన కొన్ని కవితాపుస్తకాలు ఆర్యగేయాలు, యుగధర్మగేయాలు, సీతారామ శతకము, రాధేశ్యామ శతకము, గీతామృత గేయ ద్విపదులు మచ్చుకు కొన్ని, తన గృహస్థ జీవనములో శ్రీమతి అనసూయను ధర్మపత్నిగా స్వీకరించిన వీరికి నల్గురు పుత్రులు, ఇద్దరు కుమార్తెలు. అందోలు జోగిపేట ఆర్యసమాజ స్థాపకుడుగా ప్రధాన్‌గా, మంత్రిగా సేవలను అందించారు. తను నమ్మిన సిద్ధాంతాలకు కట్టుబడి నిరంతరము

కవితలతో సమాజములోని కుళ్ళు కుతంత్రాలను నిర్భయంగా బట్టబయలు చేసారు. నిజాం నిరంకుశ పాలనకు వ్యతిరేకంగా జరిపిన తెలంగాణ విమోచన ఉద్యమంలో చురుకైన పాత్రపోషించిన కవిగారు 18-2-2018 ప్రాతః కాలము తన స్వగృహములో తుది శ్వాస వదలి భగవత్ సన్నిధికి ఏగినారు.

विश्व शान्ति का केवल एक ही मार्ग है- ''वैदिक धर्म''

-खुशहालचन्द्र आर्य

जैसे सत्य एक ही होता है, असत्य अनेकों हो सकते हैं। दो बिन्दुओं को मिलाने वाली रेखा केवल एक ही हो सकता है बाकी मत, पंथ, सम्प्रदाय अनेकों हो सकते हैं। धर्म वह होता है जो केवल मानव मात्र ही नहीं बल्कि प्राणी-मात्र की भलाई व कल्याण चाहने वाला हो। किसी भी जीव के प्रति अन्याय, पक्षपात व अत्याचार न करता हो। सब प्राणियों का पिता केवल एक ईश्वर ही है, इसलिए जितने भी प्राणी हैं, वे सभी ईश्वर के पुत्र-पुत्रियां हैं। पिता अपने सभी पुत्र व पुत्रियों को एक समान ही प्यार करता है, इसलिए जो धर्म ईश्वर-प्रदत्त होगा, वही धर्म सभी प्राणियों का हितकारी व कल्याणकारी होगा

वेद ईश्वर के बनाए हु हैं, इसलिए वैदिक धर्म यानि वेदों के अनुसार चलने वाला धर्म ही पूर्व मानव-मात्र का धर्म हो सकता है। बाकी जितने भी धर्म के नाम से प्रचलित मत, पंथ सम्प्रदाय हैं वे सब किसी न किसी व्यक्ति विशेष द्वारा चलाए हुए हैं। मनुष्य एक अल्पज्ञ प्राणी है, वह चाहे कितना भी महान् क्यों न हों, उसके अल्पज्ञ होने के नाते कुछ न कुछ कमी व स्वार्थ जरुर-जरुर रहेगा। वह अपने ही मत वालों को अधिक पसन्द करेगा और दूसरों के मत वालों को कम पसन्द करेगा। यही भेद-भाव लड़ाई-झगड़े की जड़ है और एक दूसरे की अलग-अलग करती है और दुःख का कारण है।

विश्व में जितने भी मत व पंथ हैं वे सभी किसी न किसी व्यक्ति विशेष द्वारा चलाए हुए हैं। जैसे ईसाई मत ईशा ने चलाया था। मुस्लिम मत मोहम्मद साहब ने चलाया था, पारसी मत मूसा ने चलाया था, सिख मत गुरु नानक ने चलाया था, जैन मत महावीर स्वामी ने चलाया था और बौद्ध मत महात्मा बुद्ध ने चलाया था। इन मतों से विश्व का कल्याण कभी नहीं हो सकता इसलिए इन मतों को मानने से विश्व में सुख व शान्ति कभी भी स्थापित नहीं हो सकती। अब प्रश्न उठता है कि वैदिक धर्म से ही विश्व में सुख व शान्ति कैसे स्थापित हो सकती है ? इसके निम्नलिखित मुख्य कारण हैं -

(१) वैदिक धर्म सृष्टि के आदि में ईश्वर प्रदत्त धर्म है - मनुष्य में स्वाभावकि ज्ञान कम और नैमेत्तिक ज्ञान अधिक। पशु-पक्षियों में स्वाभाविक ज्ञान अधिक और नेमेत्तिक ज्ञान बहुत कम होता है। स्वाभाविक ज्ञान वह होता है जो जीवन चलाने के लिए आवश्यक होता है, जैसे खाना-पीना, सोना-जागना, उठना-बैठना, रोना-हंसना तथा सन्तान पैदा करना आदि। इन कामों का फल नहीं मिलता कारण ये हर जीव के लिए करने जरुरी हैं। दूसरा ज्ञान है नैमेत्तिक ज्ञान, वह सिखाने से सीखा जाता है। यह ज्ञान मनुष्य में अधिक है, इसीलिए मनुष्य सिखाने से सीखता है। बिना सिखाए वह मूर्ख ही बना रहता है। इसीलिए ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद हैं, यह चारों वेद चा ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य, अंगीरा थे, उनके हृदय में ईश्वर ने चारों वेद का प्रकाश क्मरशः किया और लोगों को सुनाया।

वैसे तो चारों वोदों का सन्देश चारों ऋषियों के मुख से सभी उपस्थित स्त्री व पुरुषों ने सुना पर ब्रह्म ऋषि ने उन चारों वेदों को कण्ठस्थ कर लिया और उसने अपने शिष्यों को तथा अन्य लौगों को सुनाया। और उन लोगों ने अपने पुत्र व पुत्रियों को सुनाया। इस प्रकार यह सुनना और सुनाना की परम्परा चालू हो गई। जब तक कागज, स्याही, दवात, कलम का आविष्कार नहीं हुआ और वेद पुस्तकों में लिखा नहीं गया, तब तक यह परम्परा चलती रही। पुस्तकों में लिखे जाने के बाद यह परम्परा प्रायः समाप्त हो गई पर दिक्षिण में अभी तक भी चलती आ रही है। इसीलिए वेदों को श्रुति भी कहते हैं जिसका तात्पर्य सुन-सुन कर सीखना। ईश्वर ने वेदों में मनुष्यों के लिए यह ज्ञान दिया है कि मनुष्य को क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए। जिन कामों को करने से मनुष्य, धर्म, अर्थ, काम को धर्मानुसार यानि वेद अनुसार करने से इनके फल मोक्ष को प्राप्त कर सकता है, जो मानव-मात्र का अन्तिम लक्ष्य है जिसके पाने के लिए ईश्वर जीव को मनुष्य योनि में भोजता है। इसीलिए हम कह सकते हैं कि वैदिक धर्म ही एक ऐसा सच्चा धर्म है जिसके इनुसार चलने से मनुष्य अपने जीवन में स्वयं भी सुखी व प्रसन्न रह सकता है औ दूसरों को भी सुखी व प्रसन्न रख सकता है। इसीलिए इसी धर्म को संसार में सुख व शान्ति स्थापित करने का आधार मानते हैं।

(२) वैदिक धर्म ही प्राणी मात्र से प्रेम करने की बात कहता है और परस्पर प्रेम से रहने की बात सीखाता है किसी से भी भेदभाव रखने की नहीं सिखाता। कारण वैदिक धर्म मानव-मात्र का धर्म है। किसी एक जाति, देश या वर्ग का नहीं है। ईश्वर सबका पिता है और यह धर्म उस पिता के द्वारा ही चलाया हुआ है। हम सब उस परमपिता परमात्मा के पुत्र व पुत्रियां है। पिता अपनी सन्तान का भला व कल्याण करना चाहता है। इसीलिए ईश्वर ने हमारे कल्याण के लिए ही वेदों का प्रकाश चार ऋषियों के हृदय में किया। वेदों में इतिहास भी नहीं है कारण यह आदि ग्रन्थ है। इतिहास बाद में लिखा जाता है।

(३) वेदों में न कोई कुछ घटा सकता और न ही कुछ बढ़ा सकता है -कारण यह पूर्ण ज्ञान है और पूर्ण ज्ञानवान ईश्वर द्वारा प्रदत्त है। बाकी हमारे धार्मिक गरन्थ रामायण, महाभारत, गीता, मनुस्मृति आदि में ब्राह्मणों ने अपने स्वार्थ के लिए काफी मिलावट कर दी है परन्तु वेदों में ये स्वार्थी ब्राह्मण कोई मिलावट नहीं कर पा रहे हैं कारण इनसे सस्वर बोलने में चढ़ाव-उतराव इस स्मि से है जिसके बोलने से मिलावट पकड़ी जाती है इससे वे मिलावट नहीं कर पाते इसलिए वह ईश्वरीय ज्ञान आज भी हमारे पास त्यों का त्यों हैं। इस अदितियता

आर्य समाज उत्तर लालागुड़ा में
दि. १३ फरवरी २०१८ को

ऋषिबोधोत्सव

पर्व बड़े ही भव्य रूप से मनाया गया

आर्य समाज उत्तर लालागुड़ा में दि. १३ फरवरी २०१८ को ऋषिबोधोत्सव पर्व बड़े ही भव्य रूप से मनाया गया इस कार्यक्रम में बडी संख्या में नव जवान उपस्थित रहे

Ramayanapet lo gau raksha samithi Arya Samaj Arya Nagar North Lalaguda karya kartalu sabhyulu Arya Nagar prajalu ah yokka sthalani parisheelinchi danini dayanand saraswati go rakshana samithi abhivruddi cheyadanki arya nagar arya samaj committee ah pradeshaniki velli akkada bojanalu chesi andaru danni thilakinchi vachamu Mukya athithulu ga velli LA Co- convenor: P Ashok, convenor: M Dharam veerji, Adhoc committee members:P. Varaprasad, Gopichand, K R Bhikshapathi, C. Upender, M. Dharamdev, B. Shyam, C. Vijay, M. Madhu babu,B. Balaram, Nacharam Swamy, P. Subhash, P. Bharath kumar, P. Raj Kumar, Kannappa, A. Raju
Legal advisor: P. Satyanarayana, A. Satyanandam
Panch committee sabhyulu: B. Pandu, C. Narsing rao, P. Gyananandam, C. Satyanarayana, P. Lingam, Military Yadgiri, B. Madhu verandharu palgonnaru...

గోరక్షణ స్థలంలో ప్రత్యేక పూజలు చేసిన వర్యసమాజ్ ప్రతినిధులు తార్నాక, ఫిబ్రవరి 25 ప్రభాతవార్త : నార్త్‌లాలాగూడలోని ఆర్యనగర్ ఆర్య సమాజ్ గోరక్షణసమితి ప్రతినిధులు భారి సంఖ్యలో సోమవారం రామాయన్‌పేట్‌కు తరలి వెళ్లారు. అక్కడ ఏర్పాటు చేయనున్న గోరక్షణ సమితి స్థలంలో ప్రత్యేక పూజలు చేశారు. ఈ సందర్భంగా ఆర్యసమాజ్ కన్వీనర్ ఎం. ధరమ్‌వీర్, కోకన్వీనర్ పి. అశోక్ మాట్లాడుతూ సాధ్యమైనంత త్వరలో గోరక్షణ సమితి స్థలంలో గోవుల వరిరక్షణకు ఏర్పాట్లను చేయునున్నట్లు వివరించారు. గోవులను రక్షించాల్సిన భాద్యత ప్రతి ఒక్కరిపై
ఉందన్నారు. ఈ కార్యక్రమంలో సంస్థ ప్రతినిధులు శ్యామ్, విజయ్, వరప్రసాద్, గోపిచంద్, మధుబాబు, స్వామి, నత్యానందంతో పాటు వలువురు పాల్గొన్నారు.

Dateof Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month
आर्य जीवन 03-03-2018 Registered-Reg. No. HD/783/2018-20 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
Editor: **Vithal Rao**, M.Sc. LL.B., Sahityaratna
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax : 040-24557946
Request to donate Rs. 250/- సంపాదకులు : విఠల్ రావు, మంత్రి సభ

To,

आर्य जीवन पाक्षिक पत्र का स्वामित्व सम्बन्धी विवरण

फार्म ४ नियम ८

(प्रेस और रजिस्ट्रेसन एक्ट)

प्रकाशन का स्थान	:	आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना महर्षि दयानन्दमार्ग, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद
प्रकाशन का समय	:	प्रति मास ३ एवं १८ तारीख को
मुद्रक का नाम	:	आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना घर नं. ४-२-१५. महर्षि दयानन्द मार्ग सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद
सम्पादक	:	विट्ठलराव
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
जो व्यक्ति पत्र के स्वामी है	:	आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना
भागीदार हिस्सेदार	:	आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना

मैं विट्ठलराव सुपुत्र गोविन्द राव इस पत्र के द्वारा घोषणा करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण जहां तक मेरा ज्ञान हैं वास्तव में सत्य है ।

विट्ठल राव, मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्दमार्ग, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद, आ.प्र.-तेलंगाना,

ऐसे कारज कर चलो, मरे अमर हो जाए

अब लोग क्या कहेंगे, यह सोच परेशान ।
सत्य तुला पर तोल कर, लेना उसको मान ।।

साफ साफ सच कहे, फैसला हो जाए ।
झूठ अगर कहता रहे, फासला बढ़ जाए ।

हिस्सा बन कर भीड़ का, गलत दिशा में जाए।
सही दिशा में तू चले, एकला भी चल पाए ।।

भेड़ों के बीच फंसा, मुंडन को तैयार ।
सिंह शावक भेड़ नहीं, दहाड़ तू इस बार ।

साथ भीड़ के चल दिये, बिना दिशा पहचान।
अकेला अब तू चल पड़, दशा दिशा को जान ।।

ठूंठ बडे आँधे गिरे, आंधी में इस बार ।
लघु दूब पर हिली नहीं, बची रही हर बार ।।

ऐसे कारज मत करो, जीते जी मर जाए ।
ऐसे कारज कर चलो, मरे अमर हो जाए ।।

गुब्बारे खरीद कर, बच्चा खुश हो जाए ।
दूजा उसको बेच कर, अपनी भूख मिटाए ।।

अपनी ज़रूरत को सब, देते हैं सम्मान ।
खत्म ज़रूरत हो गई, फिर ना मिलता मान ।।

जितनी जिसकी जरूरत, उतना वही गरीब ।
ऐसा पास पड़ा, नहीं दिल के बड़े अमीर ।

नरेन्द्र आहुजा ''विवेक''

से यह भी सिद्ध होता है कि यह वेद ज्ञान ईश्वर का है ।

(४) मानव-मात्र का धर्म वही हो सकता हो जो सृष्टि के आरम्भ से चला हो - बाद में चला हुआ धर्म, मानव-मात्र का नहीं हो सकता कारण उस धर्म के चलने से पहले भी कोई धर्म माना जाता होता । बाद में किसी व्यक्ति द्वारा चलाया हुआ धर्म, धर्म न होकर कोई मत, पंथ व सम्प्रदाय ही है जो कोई वर्ग विशेष द्वारा माना जाता है । इसलिए वैदिक धर्म जो सृष्टि से आरम्भ से चला हुआ है वही मानव-मात्र का धर्म है अन्य नहीं ।

(५) वेद किसी देशीय भाषा में नहीं है, वेद संस्कृत भाषा मे है, जो सब भाषाओं की जननी है और सृष्टि के आरम्भ की भाषा है । अन्य धर्म गरन्थ किसी देशीय भाषा में है, इसलिए वह मानव-मात्र का धर्म नहीं हो सकता ।

(६) वेद प्रकृति के अनुसार है, वेदों में प्रकृति के विरुद्ध कोई बात नहीं है । जैसे एक व्यक्ति इतना योगी, तपस्वी व पहुंचा हुआ संन्यासी हो जो एक समय में ही मुम्बई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली दिखाई देता है । यह बात प्रकृति विरुद्ध है । एक व्यक्ति एक समय में एक ही जगह दिखाई देगा । मनुष्यों द्वारा चलाए गए मत व पंथों में अपना चमत्कार दिखाने के लिए प्रकृति विरुद्ध बातें बताते हैं, जैसे ईसाई लोग कहते हैं ईशा की शरण में आ जाओ तुम्हारे सब पाप धुल जायेगे और मोक्ष के अधिकारी बन जाओगे । मुस्लिम भाई कहते हैं कि मोहम्मद साहब ने चिटली उंगली से चान्द के दो टुकड़े कर दिये । पौराणिक भाई इस मामलें में सबसे आगे हैं । वे तो कहते हैं कि हनुमान जी ने बचपन में सूर्य को मुख में रख लिया, कुन्ती को कर्ण कान से हुआ था, भगवान कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को चिटली उंगली से उठा लिया । यह सब काम प्रकृति विरुद्ध है इसलिए यह सब असम्भव हे । इस लिए यह सब अन्धविश्वास है वैदिक धर्म इन सब बातों को नहीं मानता । ये धर्म केवल बुद्धि, तर्क व विज्ञान सम्मत है, उसी बात को मानता है, जिसे हर व्यक्ति को मानना चाहिए जो यथार्थ है ।

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor : Vithal Rao Arya ● Email : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691
संपादकुलु : శ్రీ విఠల్‌రావు ఆర్య మంత్రి సభ, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph: 040-24753827, Email:acharyavithal@gmail.com
संपादक : श्री विट्ठलराव आर्य मंत्री सभा ने सभा की ओर से समता आकृति प्रिन्टर्स में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशकः आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-500095.